Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

अखाड़ों की भूमिका-मंदिर निर्माण एवं पुनरुद्धार के विशेष संदर्भ में

सोनिका गुप्ता
शोध छात्रा, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

Article Info

Volume 7, Issue 1
Page Number : 48-50
Publication Issue :
January-February-2024
Article History
Accepted : 25 Jan 2024
Published : 15 Feb 2024

शोधसारांश- देश के विभिन्न तीर्थ स्थान में स्थित अखाड़े ने धार्मिक स्थलों को अपना केंद्र बनाया। अनेक मंदिरों का निर्माण कार्य कराया एवं उसके प्रबंधन की समुचित व्यवस्था की। जनजीवन में अच्छे मूल्य की स्थापना की। समाज के लिए लोकगीत के कार्यों में अग्रणी रहे। इन सब कार्यों के पीछे उनका उद्देश्य पवित्र रहा, भावनाएं जनकल्याण की रहीं। अत: हम कह सकते हैं कि अखाड़े ने अपना अमूल्य योगदान भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं विस्तार में दिया।

मुख्य शब्द- तीर्थ, प्रबंधन, मंदिर, समाज, निर्माण, अखाड़ा, भारतीय संस्कृति।

प्रारंभ में अखाड़ों की स्थापना विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों के आक्रमण, यवनों के अत्याचार, ईर्ष्या, आंतरिक फूट तथा भेदभाव जैसी अनेक समस्याओं के निवारण हेतु हुई थी। आगे चलकर मध्यकाल में, स्थापना के समय, सैनिक छावनी जैसा अखाड़ों का स्वरूप रहा। एकमात्र उद्देश्य प्रमुख था वह था – धर्म की रक्षा। स्थाई रूप से विभिन्न स्थानों में बस जाने के बाद अखाड़ों की भूमिका, उनके लक्ष्य एवं उद्देश्य परिवर्तित हुए। अखाड़ों की सैनिक छावनी वाली भूमिका ब्रिटिश शासन काल तक धीरे–धीरे समाप्त हो गई। अखाड़ों ने भारतीय संस्कृति की रक्षा, उन्नति एवं सनातन धर्म के प्रचार प्रसार में अपना ध्यान केंद्रित किया। लोकहित के कार्यों में संलग्न होकर अखाड़ों ने अपनी विशेष भूमिका निभाई। ब्रह्मर्षिजी , भूतपूर्व महंत, पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन, प्रयाग, लिखते हैं कि, 'सामाजिक व्यवस्था में नैतिकता की स्थापना अखाड़ों का परम लक्ष्य है, वही सदस्यों का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन को परोपकार एवं धार्मिक ढांचे में डालकर समाज में अच्छे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की स्थापना करें तथा जनता को सही दिशा निर्देशित करें।[1]

अखाड़ों में रहने वाले सन्यासियों के जीवन के कुछ प्रमुख उद्देश्य होते हैं जैसे – हिंदू धर्म का प्रचार प्रसार, भगवान शिव की पूजा–उपासना, भारत के पवित्र तीर्थों का भ्रमण तथा जनकल्याण के लिए लोक सेवा ।[2]

अवध के नवाब सफदरगंज ने अठारहवीं शताब्दी में अयोध्या में महंत अभयरामदास, जो वैरागियों के निर्वाणी अखाड़े के महंत थे, मंदिर निर्माण हेतु हनुमानगढ़ी पर भूमि दान दिया था।[3] अयोध्या के अनेकों मंदिरों का मरम्मत कार्य सफदरगंज के दीवान नवल राय द्वारा संपन्न कराया गया।[4] सफदरगंज द्वारा प्रदत्त भूमि पर हनुमानगढ़ी मंदिर बनाने का समर्थन आसिफउद्दौला द्वारा किया गया।[5]

प्रयाग में स्थित अखाड़े में दशनामी संप्रदाय के पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी ने जनता के धार्मिक– सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित करने में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई। युद्ध के दिनों में वीरता प्रदर्शित करने तथा शांति के दिनों में

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

सनातन धर्म संस्कृति का प्रचार–प्रसार करने का उद्देश्य लेकर संकल्पित नागा संतो को उत्पन्न करने का श्रेय इसी अखाड़े को जाता है। इस अखाड़े को भारत के कुछ प्राचीन मंदिरों का संरक्षण एवं पुनरुद्धार करने का श्रेय भी है। इस अखाड़े द्वारा संरक्षित मंदिरों की लंबी सूची महंत लालपुरी द्वारा प्रदान की गई है।[6] जिसमें प्रयाग, वाराणसी, कनखल, उज्जैन, पौड़ी गढ़वाल, कुरुक्षेत्र, पिछेवा, स्थानेश्वर, भर, देहरादून, बडौदा, आगरा आदि स्थानों के मंदिर सम्मिलित हैं। इस अखाड़े के नागा सन्यासियों द्वारा तीर्थों एवं मंदिरों की रक्षा हेतु अनेकों युद्ध आक्रमणकारियों के विरुद्ध किये तथा वीरगति को प्राप्त हुए जिसमें गुजरात में द्वारकाधीश मंदिर[7], काशी विश्वनाथ मंदिर[8] एवं मथुरा के मंदिर[9] शामिल है। प्रयाग में महानिर्वाणी अखाड़े द्वारा संरक्षित मंदिरों में अलोपीबाग में स्थित अलोपशंकरी मंदिर एवं दारागंज स्थित वेणीमाधव मंदिर प्रसिद्ध है जिसका विस्तार, पुनरुद्धार समय– समय पर कराया जाता है।

प्रयाग का दूसरा प्रसिद्ध दशनामी अखाड़ा तपोनिधि श्री निरंजनी अखाड़ा है। अखाड़े का मुख्यालय प्रयाग में ही है, परंतु एक शाखा कनखल(हरिद्धार) में भी है। प्रयाग, वाराणसी, हरिद्धार आदि स्थानों में कुछ मंदिरों के संरक्षण का श्रेय इस अखाड़े को जाता है। बाघंबरी गद्दी, निरंजनी अखाड़े की ही एक शाखा है। इसकी स्थापना सोलहवीं शताब्दी में शैव मतावलंबी बाघंबरी बाबा ने की[10] जो दारागंज, प्रयाग में स्थित है। बादशाह औरंगजेब ने इनके चमत्कारों से प्रभावित होकर तेरह गांव माफी लगा दिए।[11] लेटे हुए हनुमान जी का मंदिर, प्रयाग में जो स्थित है, पूजा–प्रबंध, देखरेख आदि बाघंबरी गद्दी की ओर से ही होता है।

उदासीन, वैरागी एवं निर्मल अखाड़े अपने अखाड़ा क्षेत्रों के मंदिरों का प्रबंध व्यवस्था करते हैं। इनके अधिकांश मंदिर अमृतसर, हरिद्धार, अयोध्या, वाराणसी आदि स्थानों में है। अयोध्या का हनुमानगढ़ी मंदिर, वैष्णव वैरागी (रामानंदी) नागाओं की एक सभा करती है। इस मंदिर में 500 नागा साधु निवास करते हैं।[12] यह पंचायती मंदिर है, जो एक किले के समान है। खाकी अखाड़ा के संस्थापक, चित्रकूट के दयाराम, ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला के समय में चार बीघा भूमि अयोध्या में प्राप्त कर एक सुंदर मंदिर का निर्माण कराया था।[13] वैष्णव अखाड़ा अधिकांश रूप से अपने जीवन निर्वाह हेतु अपने भू संपत्ति एवं मंदिरों के चढ़ावे पर निर्भर है।[14]

वैष्णव अखाड़ा का एक बड़ा स्थान[15] दारागंज प्रयाग में है। अकबर के समकालीन एक विद्वान चमत्कारी संत मद्देव मुरारी जी को अकबर के प्रयाग स्थित किले के अंदर पातालपुरी मंदिर की वर्तमान मूर्तियों को प्रकट करने का श्रेय दिया जाता है जो वर्तमान रूप में प्रतिष्ठित है।[16]

इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि देश के विभिन्न तीर्थ स्थान में स्थित अखाड़े ने धार्मिक स्थलों को अपना केंद्र बनाया। अनेक मंदिरों का निर्माण कार्य कराया एवं उसके प्रबंधन की समुचित व्यवस्था की। जनजीवन में अच्छे मूल्य की स्थापना की। समाज के लिए लोकगीत के कार्यों में अग्रणी रहे। इन सब कार्यों के पीछे उनका उद्देश्य पवित्र रहा, भावनाएं जनकल्याण की रहीं। अत: हम कह सकते हैं कि अखाड़े ने अपना अमूल्य योगदान भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं विस्तार में दिया।

सन्दर्भ–

1. उदासीन कल्पतरु (श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित), पृष्ठ– 2
1. 2.महंत लालपुरी, 'श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी एवं दशनाम नागा संन्यासियों का संक्षिप्त परिचय' (हरिद्धार: श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, कनखल, 1988), पृष्ठ–7
2. पीटर वान डर वीर, 'गाड मस्ट बी लिब्रेटेड' : ए हिंदू लिबरेशन मूवमेंट इन अयोध्या; मॉडर्न एशियन स्टडीज, भाग 21(2), 1987, पृष्ठ–288
3. वही, पृष्ठ–288

4. वही, पृष्ठ–288
5. लालपुरी (पूर्वोक्त), पृष्ठ–7–20
6. लालपुरी (पूर्वोक्त), पृष्ठ–7
7. जदुनाथ सरकार, 'हिस्ट्री आफ दशनामी नागा संन्यासीज'(इलाहाबाद: श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, दारागंज, 1950), पृष्ठ–87–88
8. इंडियन ऐंटीक्वेरी (1907), पृष्ठ–61; एच0 आर0 गुप्ता – मराठाज ऐंड पानीपत' (चंडीगढ, 1961), पृष्ठ–88
9. हरेंद्र प्रताप सिन्हा, 'भारत को प्रयाग की देन' (इलाहाबाद, 1953), पृष्ठ–46
10. 11. वही, पृष्ठ–46–47
11. 12. एच0 आर0 नेविल– 'फैजाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर' (1905), पृष्ठ–61
12. 13. फैजाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (पूर्वोक्त), पृष्ठ–61
13. 14. फैजाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (पूर्वोक्त), पृष्ठ–60–61
14. 15. हरेन्द्र प्रताप सिन्हा, 'भारत को प्रयाग की देन', पृष्ठ–37
15. 16. वही, पृष्ठ–37–38